

## 2+2 वार्ता की मेज़बानी करेगा भारत

### चर्चा में क्यों?

भारत 6 सितंबर को संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ 2+2 वार्ता के उद्घाटन दौर की मेज़बानी करेगा। इस मंत्रसितरीय बैठक में द्वपिक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों को शामिल किया जाएगा। इस वार्ता का नेतृत्व भारत की ओर से वदिश मंत्री सुषमा स्वराज तथा रक्षा मंत्री नरिमला सीतारमण और अमेरिका की ओर से राज्य सचिव माइक आर.पोम्पेओ तथा रक्षा सचिव जेम्स मैटसि करेंगे।

### परमुख मुद्दे

- दोनों देशों के बीच सामरिक और सुरक्षा संबंधों को मज़बूत करने के उद्देश्य से 2+2 बैठक में साझा हति से संबंधित द्वपिक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों की वसितृत शरूखला शामिल होगी।
- जून 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने रणनीतिक स्तर की वार्ता के लिये "2+2" वार्ता पर सहमत वियक्त की थी।
- पछिले साल जून के बाद बैठक की घोषणा दो बार स्थगति की जा चुकी है क्योंकि अमेरिका के ईरान वरिधी प्रतबिंध भारत के ऊर्जा परदृश्य को प्रभावति कर सकते हैं।
- वार्ता का यह नया प्रारूप ओबामा प्रशासन के दौरान आयोजति दोनों देशों के वदिश और वाणजिय मंत्रियों के बीच हुए रणनीतिक और वाणजियिक वार्तालाप को प्रतस्थिपति करता है।
- वार्ता का प्रमुख फोकस संचार, संगतता, सुरक्षा समझौते (COMCASA) जैसे प्रमुख रक्षा समझौतों को अंतिम रूप देने पर होगा। COMCASA, एक बुनयादी रक्षा संधि है जो भारत को अन्य देशों से महत्त्वपूर्ण, सुरक्षति और एन्क्रिप्टेड रक्षा प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगी।

### ईरान के खिलाफ प्रतबिंध

- '2+2 वार्ता' की घोषणा ईरान और रूस पर लक्षति अनपेक्षति प्रतबिंधों से जुड़ी भारत की संभावनाओं के बीच आई है।
- अतीत में अमेरिका ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा में ईरानी कच्चे तेल की केंद्रीय भूमिका नभाई थी। साथ ही, नई दलिली ने धीरे-धीरे अमेरिकी प्रतबिंधों का अनुपालन करने और वाशगिटन से आवश्यक छूट को सुरक्षति करने के लिये अपने तेल आयात को कम कर दिया।
- अमेरिका ने भारत सहति सभी देशों से कहा है कि वे 4 नवंबर तक ईरान से अपना तेल आयात बंद करें। अगर भारत इसका पालन नहीं करता है तो देसी कंपनियों को इसका खामयाजा भुगतना पड़ेगा।
- ईरान को लेकर ट्रंप प्रशासन ने अतविदी रुख अखतयार कर लया है और इस मोर्चे पर वह कोई ढील देने को तैयार नहीं है। वहीं, ईरान भी इस मामले में तीखे तेवर दखि रहा है। उसने भारत को हदियत दी है कि ईरान के साथ तेल आयात कम करने का असर दोनों देशों के रशितों पर पड़ेगा।
- यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि अतीत में भारत ने ईरानी तेल की खरीद के संबंध में प्रतबिंध के खतरे का सामना किया है।
- रूस के साथ भारत के रक्षा सौदों पर भी अमेरिका की टेढ़ी नज़र है। भारत रूस से सतह से हवा में मार करने वाली एस 400 मसिाइल खरीदने की प्रकरया में है जिस पर अब अमेरिकी ग्रहण लग गया है। असल में अमेरिका ने उन देशों पर प्रतबिंध लगाने का प्रावधान किया है जो उसके द्वारा काली सूची में डाली गई 39 रूसी कंपनियों से कसि भी प्रकार का वतित्तीय लेन-देन करेंगे।
- ईरान और रूस से जुड़े मसलों के अलावा व्यापार के क्षेत्र में भी भारत-अमेरिका रशितों में तनाव बढ़ा है। ट्रंप प्रशासन नई दलिली पर आयात शुल्क घटाने का दबाव बढ़ा रहा है।
- यह पाकसितान के चुनावों के बाद दोनों पक्षों के बीच उच्चस्तरीय बातचीत का पहला दौर होगा जो जुलाई के आखरि सप्ताह में समाप्त होगा।

### वार्ता का महत्त्व

- यह वार्ता इस क्षेत्र में समान वचिरधारा वाले देशों के लिये वचिरों को साझा करने का मौका है तथा पारस्परिक उद्देश्यों तक पहुँचने के लिये समन्वति रचनात्मक तरीका भी है।
- उल्लेखनीय है कि दोनों पक्ष भारत-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा कर सकते हैं, जहाँ चीन अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है। भारत, वार्ता के दौरान ट्रंप प्रशासन के रूस के खिलाफ प्रतबिंधों के कारन भारत पर पड़ने वाले प्रभाव का मामला उठा सकता है।

